1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 48, अंक 21 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 मार्च, 2025 से रविवार 23 मार्च, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में

रोहतक में विराट आर्य महासम्मेलन

घर-घर तक पहुंचाएं महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा - बण्डारू दत्तात्रेय, राज्यपाल हरियाणा

नशे के खिलाफ आंदोलन चलाकर युवा शक्ति को बचाएं -आचार्य देवव्रत राज्यपाल गुजरात

प्रेरक और अनुकरणीय है आर्यसमाज का 150वर्षों का स्वर्णिम इतिहास - विनय आर्य

आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार को तेज करने की आवश्यकता -महिपाल ढांडा, शिक्षामंत्री, हरियाणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में, 9 मार्च 2025 को दयानन्द मठ रोहतक हरियाणा के प्रांगण में आर्य महासम्मेलन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ, इस अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि श्री बण्डारू दत्तात्रेय, राज्यपाल हरियाणा एवं विशिष्ट अतिथि श्री महिपाल ढांडा, शिक्षामंत्री हरियाणा सरकार, सूचना आयुक्त डॉ कुलदीप छिक्कारा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, हरियाणा सभा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान, स्वामी देवव्रत जी, आचार्य सत्यजित जी, स्वामी सुखानन्द जी, आचार्य ओम प्रकाश जी, स्वामी विपुल विद्यावाचस्पति, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी धर्मदेव जी, आचार्य ऋषिपाल जी, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हरीश आर्य जी, महामंत्री श्री विजय गौतम जी इत्यादि महानुभाव तथा भारी संख्या में आर्य नर-नारी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल श्री बण्डारू दत्तात्रेय जी ने अपने संदेश में कहा कि वर्तमान में देश की युवा शक्ति को संस्कार प्रदान करने की बहुत आवयश्कता है, जिससे उनको सही दिशा मिल सके और उनके व्यक्तित्व का निर्माण हो सके, महिलाओं और युवाओं को महर्षि दयानन्द के विचारों के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए। शिक्षामंत्री हरियाणा सरकार ने कहा कि आर्य समाज के विद्वानों ने समाज को सही दिशा दिखाने के साथ सामाजिक बुराईयों को दूर करने का कार्य किया है, आर्य समाज के बढते हुए कदम भारत को नई ऊंचाई प्रदान करेंगे। हमें सामने खड़ी चुनौतियों का सामना करना है।

- शेष पृष्ठ 4 पर

राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल हरियाणा श्री बंडारू दत्तात्रेय जी एवं शिक्षामन्त्री महिपाल ढांडा को स्मृति चिह्न भेंट करते हरियाणा सभा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान, मन्त्री श्री उमेद शर्मा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

150वां आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह - मुम्बई

महाराष्ट्र के माननीय मुख्यमन्त्री

श्री देवेन्द्र फडणवीस को दिया आमन्त्रण

29-30 मार्च, 2025 को मुम्बई में आयोजित 150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह में पधारने हेतु मुख्यमन्त्री जी को निमन्त्रण एवं वेद भगवान पुस्तक भेंट करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, मुम्बई आर्य प्रतिनिधिसभा सभा के प्रधान श्री हरीश आर्य जी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री दयाराम बसैये जी एवं सुश्री सुमीता सुमन जी

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष

के आयोजनों की श्रृंखला में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा दिल्ली में

150 वां आर्य समाज स्थापना दिवस

दिल्ली

एक विशेष आयोजन

रविवार 6 अप्रैल 2025, प्रात 9:30 बजे
तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान | मनीष भाटिया, कोषाध्यक्ष | आर्य सतीश चड्डा, महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

धर्मपाल आर्य, प्रधान | विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष | विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज का मिलनपर्व -

20वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

सचित्र समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे - सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

17 मार्च, 2025
से
23 मार्च, 2025

देववाणी-संस्कृत

वेद-स्वाध्याय

प्रभो! मैं तो बस तेरा हूँ

आ हि ष्मा सूनवे पितापियजत्यापये। सखा सख्ये वरेण्यः।।
-ऋ० 1। 26। 6
ऋषिः- आजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ - पिता सूनवे = पिता पुत्र के लिए **हि स्म आयजति** = सर्वथा सहायता प्रदान करता है; उसकी कमी को पूरी करता है **आपिः आपये** = बन्धु, बन्धु के लिए **वरेण्यः सखा सख्ये**=श्रेष्ठ मित्र, मित्र के लिए सर्वथा सहायता प्रदान करता है।

विनय- संसार में पिता पुत्र-वात्सल्य से प्रेरित होकर पुत्र के लिए क्या नहीं करता। बन्धु, बन्धु के लिए जी-जान से पूरी सहायता करता है, श्रेष्ठ मित्र अपने मित्र के लिए सब-कुछ अर्पण करने को उद्यत रहता है, परन्तु हे प्रभो! तुम मेरे सब-कुछ हो। तुम्हारे होते हुए मुझे किसी वस्तु की कमी क्यों रहनी चाहिए? तुमसे मेरा जो सम्बन्ध है वह घनिष्ठ, अटूट सम्बन्ध है; तुम्हें मैं किस नाम से पुकारूँ? उस परिपूर्ण सम्बन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। मैं संसार की भाषा में तुझे कभी पिता, कभी बन्धु, कभी सखा पुकारता हूँ, परन्तु हे प्यारे! हे मेरी आत्मा! इन शब्दों से मेरा-तेरा वह सम्बन्ध व्यक्त नहीं हो सकता। जब मैं देखता हूँ कि तुम मेरे पैदा करनेवाले और लगातार पालनेवाले हो , तब मैं अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करने के लिए तुम्हें 'पिता-पिता' पुकारने लगता हूँ और तुमसे पुत्रवात्सल्य पाने के लिए रोने लगता हूँ। जब मुझे तुम्हारे घनिष्ठ सम्बन्ध की याद आती है- उस अटूट सम्बन्ध की जो मेरा संसार में और किसी से भी नहीं है, तब मैं बन्धु-भाव में विभोर होकर तुमसे बातें करने लगता हूँ और जब देखता हूँ कि मैं भी तुम्हारी तरह आत्मा हूँ चेतन हूँ, तुम भले ही मुझसे बहुत बड़े 'वरेण्य' होओ, तो मैं सखा बनकर तुम्हें 'वरेण्य सखा' नाम से सम्बोधित करता हूँ। हे प्रभो! तुम मुझे पुत्र मानो, बन्धु या सखा मानो, कुछ मानो, हर तरह मैं तेरा हूँ और तुम मेरे हो। हे मेरे! मुझ अपने को तुम कैसे छोड़ सकते हो? मैं अपूर्ण, अशक्त बालक तेरा हूँ, इसलिए मेरी सहायता किये बिना तुम कैसे रह सकते हो? तुम परिपूर्ण हो, तुम्हें सदा मुझे देते रहने के सिवा और कार्य ही क्या है? यही मेरे लिए तुम्हारा यजन है-तुम मुझे देते रहो और मैं लेता रहूँ यही तुम्हारी ओर से मेरा यजन है। तुमसे मेरा सम्बन्ध इसी रूप मे स्थिर है। बड़ा छोटे को दिया करता है, इसलिए मैं क्या माँगूँ? मेरी आवश्यकता को समझना और पूरी तरह पूर्ण करना; तुम स्वयं ही करोगे। हे मेरे देव! तुम स्वयं ही करोगे। बस, मैं तेरा हूँ और क्या कहूँ! हे मेरे सर्वस्व! हे मेरे सब-कुछ! मैं तेरा हूँ।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कथा वाचकों की जाति पर बहस-ये कैसी विडंबना?

मध्य प्रदेश के जबलपुर में पौराणिक लोगों के बीच एक विवाद मचा है। यह विवाद भागवत कथा को लेकर है। दरअसल, जबलपुर जिले के पनागर थाना क्षेत्र के रैपुरा गांव में कथा वाचन के लिए देविका किशोरी पहुंची थीं। तभी कुछ स्थानीय युवकों ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने देविका से कहा कि कथा वाचन सिर्फ ब्राह्मणों का अधिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर देविका कथा सुनाना चाहती हैं, तो पहले किसी ब्राह्मण युवक से शादी कर लें। देविका किशोरी, जिनका वास्तविक नाम देविका पटेल है, कुर्मी समाज से आती हैं। इसे लेकर जब बवाल मचा, तो सवाल बना कि क्या भगवान की कथा कहने का लाइसेंस सिर्फ एक ही वर्ग के लोगों को है?

सवाल केवल इतना भर नहीं है। आज का युग तार्किक युग है। मध्यकाल का जातिवाद, ऊंच-नीच गुजरे जमाने की बात हो चुकी है। महिलाएं वेद मंत्र पढ़ रही हैं, ग्रंथों का स्तुति गान कर रही हैं। आज के दौर में धर्म को एक जाति या वर्ग के खूंटे से बांधना और उसे आगे लेकर नहीं चला जा सकता है। धर्म सर्वसमाज का होता है और सर्व समाज का अंग है। अतीत में हमने जाति, छुआछूत, ऊंच-नीच जैसी गलतियाँ की, जिनका परिणाम आज भी भुगतना पड़ता है।

यह विवाद भागवत कथा को लेकर है। दरअसल, जबलपुर जिले के पनागर थाना क्षेत्र के रैपुरा गांव में कथा वाचन के लिए देविका किशोरी पहुंची थीं। तभी कुछ स्थानीय युवकों ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने देविका से कहा कि कथा वाचन सिर्फ ब्राह्मणों का अधिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर देविका कथा सुनाना चाहती हैं, तो पहले किसी ब्राह्मण युवक से शादी कर लें। देविका किशोरी, जिनका वास्तविक नाम देविका पटेल है, कुर्मी समाज से आती हैं। इसे लेकर जब बवाल मचा, तो सवाल बना कि क्या भगवान की कथा कहने का लाइसेंस सिर्फ एक ही वर्ग के लोगों को है?

सवाल केवल इतना भर नहीं है। आज का युग तार्किक युग है। मध्यकाल का जातिवाद, ऊंच-नीच गुजरे जमाने की बात हो चुकी है। महिलाएं वेद मंत्र पढ़ रही हैं, ग्रंथों का स्तुति गान कर रही हैं। आज के दौर में धर्म को एक जाति या वर्ग के खूंटे से बांधना और उसे आगे लेकर नहीं चला जा सकता है। धर्म सर्वसमाज का होता है और सर्व समाज का अंग है। अतीत में हमने जाति, छुआछूत, ऊंच-नीच जैसी गलतियाँ की, जिनका परिणाम आज भी भुगतना पड़ता है।

असल में गंभीरता से देखा जाए, तो भारत में जाति ऐसे समुदाय है जिसका अपना विकसित जीवन है और इसकी सदस्यता जन्म से निश्चित कर दी गई है। भारत का प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति जानता है और जातियों के पद-सोपान में ब्राह्मण सबसे ऊपर माना जाता है। जातियों के आधार पर सामाजिक आदान-प्रदान के प्रतिबंध लगे रहते हैं। कुछ जातियाँ विशेष प्रकार के व्यवसायों को अपना पुश्तैनी अधिकार समझती हैं। जातियों की परिधि में ही वैवाहिक आदान-प्रदान होता है और जातियाँ कई उप-जातियों में विभक्त होती हैं। उप-जातियों में भी वैवाहिक परिसीमाएँ हैं।

जाति का राजनीति से सम्पर्क सूत्र अगर देखें तो स्वाधीनता संग्राम के दौरान ऐसा दिखता था कि जनता पर जातिवाद का प्रभाव कम हो रहा है, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त जातिवाद ने फिर जोर पकड़ा और वयस्क मताधिकार व्यवस्था देश में लागू कर दिये जाने के कारण यह एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदित हुआ। जातियों के विकास के नाम पर राजनीतिक दल बने, उनके सामाजिक विकास की बात हुई। जातीय आन्दोलन सत्ता तक टकराए।

क्या आपने कभी अध्ययन किया या सोचा है कि आखिर क्या कमजोरियां सनातन समाज में पैदा हुई और उन कमजोरियों को नकारने के बावजूद उन्हें ही धर्म और समाज का हिस्सा बना डाला। वो कमजोरियां बाद में बीमारियाँ बनीं और इन्हीं बीमारियों के कारण सनातन धर्म का पतन होने लगा।

सनातन ग्रंथों में जैसे मनुस्मृति में मनुष्यों को चार वर्णों में बांटा गया और वर्ण अनुसार व्यवसाय सुझाए गए। एक चीज यहाँ बता दें कि संस्कृत भाषा में वर्ण का अर्थ जाति से नहीं बल्कि क्रम या वर्ग से है। 'वर्ण' का एक अर्थ ये भी है, जिसका गुण परखकर वरण किया जाए। मसलन, ये ऐसे था जैसे ब्राह्मण वर्ण में विद्वान, शिक्षक और इंजीनियर तथा वेद्य यानि डॉक्टर आते थे। इसके बाद क्षत्रिय यानि शासक, योद्धा, सैनिक फिर आते थे। वैश्य में बिजनेसमैन, उद्योगपति, जमींदार और व्यापारी आते थे। शूद्र यानि चपरासी, क्लर्क, सेवा प्रदाता, साफ-सफाई रखने वाले आदि कह सकते हैं। जैसे आज के संविधान में ग्रुप।, ठ, ब, क है? ये व्यवस्था ठीक ऐसे ही थी। किसी की कोई जाति नहीं थी। समाज किसी न किसी वर्ण के साथ जुड़ा होता था। वर्ण के साथ जुड़े लोगों को स्वर्ण यानि वर्ण के संग तथा जो वर्ण से हटकर कोई कार्य करते थे, उन्हें अवर्ण कहा जाता था। एक बात और बता दें कि ये स्वर्ण और अवर्ण चारों ही वर्ण के लोगों में थे। कोई भी आपसी भेदभाव नहीं था।

सवाल हो सकता है कि ये जाति-भेदभाव, ऊंच-नीच के भाव कहाँ से आए! असल में उस समय कोई आईटी, मेडिकल कॉलेज या आईआईएम जैसे संस्थान नहीं थे। ऐसा था कि अधिकांश पिता का कार्य बेटा सीख लेता था। यानि जो जिस कार्य को करते, उनके ग्रुप जातियों में बदलने लगे। जैसे कोई लोहे के औजार बनाने वाले इंजीनियर थे या लकड़ी के कार्य करने वाले, उनके पद लोहार और बढ़ई थे। बाद में उनके ग्रुप्स जातियों के नाम से विभाजित हुए।

महाभारत युद्ध के दौरान जातिवाद की बीमारी पनपने लगी थी। इसी के बाद जातियों का चलन बढ़ने लगा। अगर संख्या के आधार पर समझें तो ऐसे समझ सकते हैं कि बड़ी संख्या में रहने वाले ग्रुप को बड़ी जाति और छोटी संख्या में रहने वाले ग्रुप को छोटी जाति के आधार पर विभाजित किया। यानि किसी की भी जाति छोटी-बड़ी नहीं थी, संख्या छोटी-बड़ी थी। बड़ी संख्या वाले ग्रुप्स ने खुद को बड़ा और छोटी संख्या वालों ने खुद को छोटा मान लिया। दूसरा, आप इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि उस दौरान वर्ण के अनुसार भी सरनेम नहीं लगाए जाते थे। राजा हरिश्चंद्र से लेकर परीक्षित तक या कहें सम्राट अशोक तक, किसी का कोई सरनेम आपको दिखाई नहीं देगा। किन्तु इसके बाद पहले समाज में सरनेम, फिर जातियों में, फिर उनकी उपजातियों में ऐसा बंटा कि बंटता ही चला गया। यानि कभी बिना जाति के चार वर्णों में रहने वाला सनातन समाज आज हजारों जातियों और उपजातियों में विभाजित है। ना केवल विभाजित हुआ, बल्कि मेरी जाति बड़ी, तेरी जाति छोटी यानि संख्याक्रम से ऊंच-नीच तक बात आ गई। शोषण बढ़ने लगा। बड़ी संख्या के लोग छोटी संख्या के लोगों का शोषण करने लगे और समाज द्वेष का शिकार हुआ।

बुद्ध और महावीर स्वामी के बाद मध्यकाल तक आते-आते इसका लाभ बाहरी

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

नर्वस सिस्टम सम्बन्धी रोग एवं एक्यूप्रेसर द्वारा उपचार

आर्य सन्देश में प्रकाशित स्वास्थ्य संदेश के कॉलम में जो स्वास्थ्य संबंधी लेख, मौसम परिवर्तन में सावधानी बरतने, आसन, प्रणायाम, आहार, उचित जीवन शैली अथवा औषधियों से होने वाले लाभ चिकित्सा पद्धति आदि की जानकारी दी जाती है, तो वह केवल ''सर्वे सन्तु निरामया'' की परोपकारी भावना तक ही सीमित है। अतः आर्य संदेश में प्रकाशित व स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी का लाभ तो लें किंतु कोई ज्यादा अस्वस्थ्य है तो अपने चिकित्सक से ही उपचार कराए। -*संपादक*

आज दुनिया में कई लोग ऐसे रोगों से पीड़ित हैं, जिनसे उनके शरीर के कुछ अंग अपना कार्य करना बन्द कर देते हैं। ये रोग मुख्यत: मस्तिष्क (Brain), स्नायु संस्थान (nervous system) तथा मांसपेशियों (muscles) में कुछ विकार आ जाने के कारण होते हैं।

रोगों के लक्षण: रक्तसंचार विकार (vascular disorders), संक्रमण (infections), संरचनात्मक विकार (structural disorders), कार्यात्मक विकार (functional disorders) तथा अंगों में पतन आना (degene rations) इत्यादि। इन संस्थानों से संबंधित विभिन्न बीमारियां इस प्रकार हैं:-

i) **लकवा-पक्षाघात** (paralysis & stroke, facial paralysis & bell's)
ii) **मल्टीपल सलेरोसिस** (multiple sclerosis)
iii) **मसकुलर डिस्ट्रोफी** (muscular dystrophy)
iv) **मायोपैथी** (myopathy)
v) **सेरेब्रल पलसी** (cerebral palsy)
vi) **पारकिन्सन डसीज** (parkinson's disease)
vii) **पोलियो** (poliopoliomyelitis)
viii) **मिरगी-मूर्छा** (epilepsy)

लकवा नर्वस सिस्टम का एक ज्यादा गम्भीर रोग है।

लकवा-पक्षाघात (paralysis & stroke, facial paralysis-bell's)

शरीर में नर्वस सिस्टम के एक या अनेक तन्तुओं की संचालन शक्ति का शिथिल पड़ जाना अर्थात रुक जाना, पूर्णत: क्षीण हो जाना लकवा कहलाता है। लकवा मस्तिष्क में भलीभांति रक्त संचार न होने तथा मस्तिष्क, रीढ़ की हड्डी तथा स्नायु-संस्थान में किसी विकृति पैरा होने के कारण होता है। पक्षाघात के कारण शरीर पर इसका कितना प्रभाव पड़ता है वह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि मस्तिष्क तथा स्नायु संस्थान का कौन सा भाग इससे कितना प्रभावित हुआ है। यहां यह समझ लेना भी आवश्यक है कि मस्तिष्क का बायां भाग शरीर के दाहिने भाग को नियंत्रित करता है तथा इसी प्रकार मस्तिष्क का दायां भाग शरीर के बाएं भाग को संचालित करता है।

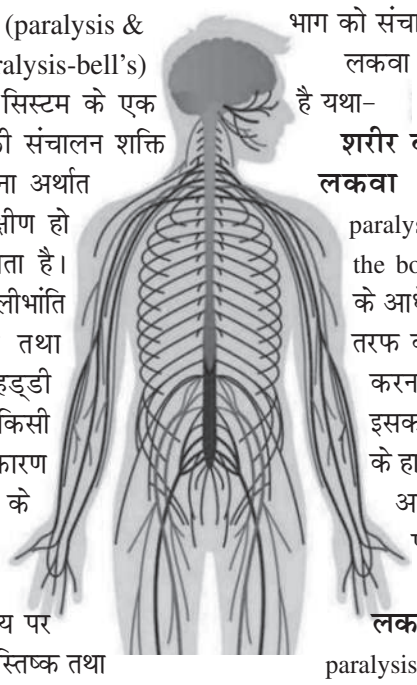

लकवा कई प्रकार का होता है यथा-

शरीर के आधे भाग का लकवा (hemiplegia-paralysis of one side of the body): इसमें शरीर के आधे भाग, दाएं या बाएं तरफ के अंग अपना कार्य करना बंद कर देते हैं। इसका प्रभाव एक तरफ के हाथ, पैर, आवाज तथा आधे मुख मण्डल पर पड़ता है।

एकांग का लकवा (monoplegia - paralysis of only one limb or part): इसमें केवल एक हाथ और एक पैर पर प्रभाव पड़ता है। इस रोग में रोगी इच्छानुसार हाथ-पैर को हिला नहीं पाता।

पूर्णांग का लकवा (quadriplegia diplegia, paralysis of corresp-onding parts of both sides of the body): इसमें व्यक्ति के दोनों हाथ और दोनों पैर बेकार हो जाते हैं अर्थात शरीर के दोनों तरफ के भाग रोगग्रस्त हो जाते हैं।

निम्नांग का लकवा (paraplegia - paralysis of both legs and lower parts of the body): इसमें पेड़गुहा (pelvic) से नीचे का भाग अर्थात जांघों से लेकर पैरों की अंगुलियों तक शरीर के सारे निचले भाग की शक्ति नष्ट हो जाती है।

स्वरयन्त्र का लकवा (vocal cord's paralysis): इसमें व्यक्ति का बोलना पूर्णरूप से या आंशिक रूप से बन्द हो जाता है।

आवाज का लकवा (bulbar paralysis or aphasia) : इस रोग में जीभ जकड़ सी जाती है जिससे बोलने में तकलीफ होती है तथा व्यक्ति तुतलाना भी शुरू कर देता है।

मुंह का लकवा (facial paralysis - bell's patsy): इसमें मुंह का एक तरफ का भाग स्थूल होकर थोड़ा घूम सा जाता है। मुंह का एक कोना नीचे हो जाता है, कई रोगियों की उस तरफ की आंख में भी टेड़ापन सा आ जाता है तथा आंख प्राय: खुली ही रहती है। आंख से पानी भी बहने लगता है। गाल पूरा फूल नहीं पाता। हंसने पर मुंह टेढ़ा लगता है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे -

यदि आर्यावर्त की भूमि सीमा की 600-700 वर्ष के पूर्व की ही बात करें तो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर तक और ब्रह्मपुत्र के प्रदेश (जिसमें वर्तमान के बर्मा, थाईलैंड, मलाया, जावा, सुमात्रा, बाली आदि) से लेकर पश्चिम में अटक (वर्तमान अफगानिस्तान से भी आगे) के विस्तृत प्रदेश तक फैला था। महाभारत काल में आर्यवर्तीय राजाओं के सम्बन्धों का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि महाभारत के अर्जुन का विवाह नागवंशियों के देश (वर्तमान अमेरिका) की उलोपी से हुआ था। पांडवों के राजसूय यज्ञ में विश्व के अनेक देशों के राजाओं ने आकर आहुति प्रदान की थी।

सिद्ध होता है कि महाभारत काल तक समस्त विश्व में वेद के मानने वालों का ही राज्य था। ईश्वर की मान्यता के विषय में विचार करेंगे तो सब लोग एक ही ईश्वर **'ओ३म्'** की ही उपासना करते थे। ईश्वर के नाम पर किसी और की उपासना का वर्णन पूरे वैदिक साहित्य और इतिहास में नहीं है। सभी एक ही विधि से यज्ञ करते थे। गो का स्थान बहुत ऊंचा था, अतिथियों को देवों की श्रेणी में रखा जाता था और पशुओं की रक्षा राजा का दायित्व था। ऐतिहासिक ग्रन्थों की बात कहें तो उसमें रामायण और महाभारत काल में भी सब महापुरुष महानुभावों को वेद का ज्ञाता, ईश्वर का उपासक, मातृ-पितृभक्त और याज्ञिक-यज्ञ करने वाला ही बताया है। यज्ञों की रक्षा करना क्षत्रियों का कर्त्तव्य भी बताया है। युद्ध आरम्भ होने से पूर्व संध्या एवं यज्ञ तथा समाप्ति पर भी संध्या और यज्ञों को करने का विधान और वर्णन हम ऐतिहासिक ग्रन्थों में पढ़ते हैं।

जीवन के मानदण्ड इतने उच्च थे कि राजा राम को वनवास भेजने में अपना नाम आता देख राजकुमार भरत ने घोषणा की कि यदि मेरे मन में भी कभी राम को वन भेजने का विचार उत्पन्न हुआ हो तो मुझे वह सजा मिले जो ''सूर्योदय के बाद उठने वाले को मिलती है।'' राज्य करने के लिए सिंहासन पर बड़े भाई राम की खड़ाऊं रख दी और स्वयं महल का त्याग कर निर्जन वन में झोपड़ी बनाकर रहा।

तक्र-विक्रयी, दुग्ध-विक्रयी यानि दूध बेचने वाला—छाछ बेचने वाला यदि किसी को आवेश में भी कह दिया जाए तो वह अपमानजनक (गाली) माना जाता था।

युद्ध भी नियमों के आधार पर होता था। समय अनुसार होता था। युद्ध के पश्चात् अक्सर विरोधी लोग आपस में मिलते भी थे, चर्चा भी करते थे, है न अद्भुत।

वेद विद्या जोकि लगभग 20500 मन्त्रों में समाहित है, को 2 अरब वर्षों से अक्षुण्ण और सुरक्षित रखने के विज्ञान का तो कोई सानी हो ही नहीं सकता जिसमें एक बिन्दु या मात्रा में आज तक कोई भेद नहीं आया। दुनिया के सब ग्रन्थों में मिलावट हो गई पर वेद के मन्त्रों में मिलावट करने का साहस कोई न कर सका। अर्थ बदल देने के मनमाने कार्य तो हुए पर मूल वेद मन्त्र को कोई दूषित न कर सका और न ही कोई बदल सका। एक ही मन्त्र को 11 अलग-अलग तरह के पाठ करके स्मरण रखा जाता था। जब सब लोग अपने याद किए पाठ को लिखते थे तो अगर कोई छोटा-सा भी अन्तर होता, तो वह एकदम से सामने आ जाता था और शुद्ध और अशुद्ध मन्त्र का भेद कर दिया जाता था। क्या यह कोई छोटा विज्ञान माना जा सकता है? यह तो हुई मन्त्र की शुद्धता को सुरक्षित रखने के विज्ञान की बात। अब उसके ज्ञान यानि उसकी व्याख्या की (वेद ज्ञान की) सुरक्षा की जैसी वैज्ञानिक व्यवस्था हमारे ऋषियों ने तैयार की थी ऐसी व्यवस्था विश्व में कहीं भी देखने को मिल ही नहीं सकती।

और वेद के अर्थों में कोई भूल-चूक न हो जाए, इसके लिए शास्त्रार्थों की अद्भुत परम्परा केवल वैदिक ऋषियों में ही थी और कुछ हद तक आज भी है। अन्य किसी मत-मतान्तर में ऐसी शास्त्रीय परम्पराएं नहीं जो वेद के अर्थों के अनर्थ को रोकने की क्षमता रखते हैं। गलत अर्थों की परम्परा कहीं शुरु हो भी जाए तो हमारे यहां ज्ञान के मन्थन की ऐसी शानदार व्यवस्था थी कि उसमें मथकर सब घी और छाछ अलग-अलग हो जाया करते थे। जानिए कैसे?

- क्रमश:

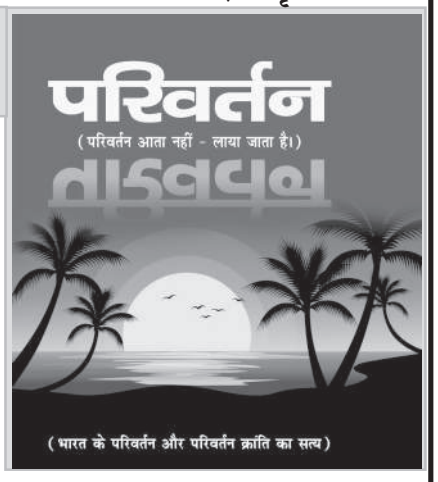

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
17 मार्च, 2025 से 23 मार्च, 2025

विदेश समाचार
मॉरिशस गणराज्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की शृंखला में

आर्य सभा मॉरीशस द्वारा आर्यसमाज का 150वां स्थापना वर्ष समारोह संपन्न

सम्पूर्ण विश्व में गौरवशाली और श्रेष्ठ है - आर्यसमाज का इतिहास - विनय आर्य

राष्ट्रपति श्री धर्मवीर गोकुल जी को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में पधारने का दिया आमन्त्रण

महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज भारत के कोने-कोने में और विश्व में मानव कल्याण के लिए पिछले 150 वर्षों से निरंतर सेवा कार्य करता आ रहा है। विश्वव्यापी विशाल संगठन में अफ्रीका महाद्वीप में आर्य सभा मॉरीशस का अपना विशेष स्थान है। जहां पर निरंतर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं का प्रचार, प्रसार और विस्तार लगातार किया जा रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्यसभा मॉरीशस द्वारा आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष 23 फरवरी से 3 मार्च 2025 तक अत्यंत हर्षोल्लास से उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर महर्षि दयानंद स्ट्रीट पोर्ट लुइस मॉरीशस के प्रांगण में प्रतिदिन यज्ञ, भजन और विशेष सत्संग, सम्मेलनों का आयोजन किया गया। जिसमें वहां के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने वेद मंत्रों के साथ आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। 1 से 3 मार्च तक विशेष आयोजन में एक दिन तेज वर्षा होने के कारण कार्यक्रम प्रभावित रहा लेकिन दूसरे दिन मॉरीशस के राष्ट्रपति ने स्वयं अपने करकमलो से कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कोर कमेटी के सदस्य श्री विनय आर्य जी भारत से पहुंचे। सभा महामंत्री जी ने मॉरीशस के राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए उन्हें वैदिक साहित्य भेंट किया और मॉरीशस के आर्य जनों और अधिकारियों को इस भव्य आयोजन की बधाई दी।

आपने इस अवसर पर संबोधित करते हुए अपने संदेश में कहा कि संपूर्ण विश्व में आर्य समाज जैसा श्रेष्ठ संगठन कोई नहीं है, आर्य समाज का इतिहास बताता है कि मानव कल्याण के लिए महर्षि दयानंद से लेकर स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और अनेक महापुरुषों ने अपना सर्वस्व न्योछावर करके वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की रक्षा की। आपने संभावित अक्टूबर 2025 में भारत में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में पधारने के लिए राष्ट्रपति डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम जी को निमन्त्रण देते हुए मॉरीशस सभा के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को पधारने की तैयारी करने का आह्वान किया। इस अवसर पर आर्य समाज के विद्वान, संन्यासी और अधिकारियों ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के ऐतिहासिक संस्मरणों का वर्णन करते हुए भविष्य में आर्य समाज की आवाज को विश्व की आवाज बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बच्चों और युवाओं की सहभागिता प्रशंसनीय रही, बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम आकर्षण का केंद्र रहे। इस अत्यंत प्रेरक कार्यक्रम में अन्य देशों के भी आर्यजन उपस्थित रहे और प्रेम सौहार्द के वातावरण में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्यसमाज द्वारा संचालित
सेवा प्रकल्प : सहयोग

जेबीएम कारपोरेट कार्यालय, गुरुग्राम में राशन एवं वस्त्र एकत्रीकरण

सार्वदेशिक सभा के अंतर्गत अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की सेवा इकाई सहयोग पूरे भारत में गतिशील है। लेकिन भारत की राजधानी दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस योजना द्वारा अभावग्रस्त सेवा बस्तियों में जो लोग, वस्त्र, जूते, चप्पल, बच्चों के पढ़ने लिखने के लिए स्टेशनरी के सामान, खेलने के लिए खिलौने आदि मूलभूत जरूरतों के लिए परेशान हैं, उन्हें सामर्थ्यवान लोगों के पुराने लेकिन पहनने लायक कपड़े, जूते, चप्पल,

स्टेशनरी, खिलौने आदि सामान, जिनका वे उपयोग नहीं करते उसे इकट्ठा करके, साफ, स्वच्छ करके, प्रेस करके, पैक करके गरीब निर्धन लोगों में वितरित करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। यह सेवा अपने आप में बहुत सफल हो रही है, गरीब सेवा बस्तियों के लोग आर्य समाज से जुड़ रहे है, दुर्गुणों से बच रहे हैं।

इस मानव कल्याण की सेवा योजना में अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रमसंघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य की प्रेरणा से जेबीएम द्वारा उनके कारपोरेट कार्यालय, गुरुग्राम ने सहयोग के अन्तर्गत वितरित होने वाले वस्त्र, राशन और अन्य सामग्री प्रदान कर मानव कल्याण के कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। इसके लिए सहयोग टीम जेबीएम कार्यालय गयी और वहां एकत्रित सामान को लेकर आई। इसके लिए जेबीएम ग्रुप का हार्दिक धन्यवाद। - *संयोजक*

प्रथम पृष्ठ का शेष

रोहतक में विराट आर्य महासम्मेलन...

ज्ञात हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस वासी मुम्बई में 29, 30 मार्च 2025 को मनाया जाना सुनिश्चित है। इस कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री हरीश आर्य और श्री विजय गौतम जी ने आर्य समाज स्थापना दिवस, समारोह मुम्बई के कार्यक्रम में उपस्थित होने का सार्वजनिक आमंत्रण दिया, दिल्ली सभा के महामंत्री एवं सार्वदेशिक सभा कोर कमेटी के सदस्य श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित आर्यजनों को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, प्रेरणाओं को अपनाने का आहवान करते हुए आर्य महापुरुषों के बलिदान तथा आर्य समाज की भारत तथा विश्व को देन का अपनी चिर-परचित शैली में वर्णन करते हुए सबसे मुंबई पहुंचने की बात कही।

200वीं जयन्ती एवं 150वें स्थापना वर्ष पर आयोजित आर्य महासम्मेलन में पधारे आर्यजनों से भरा पण्डाल

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक खेती मिशन की स्थापना की है, जिसमें इस साल 1481 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही साल भर में एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती साहीवाल नस्ल की देशी गाय पर आधारित है, ऐसे में गाय की रक्षा, गाय को घर में पालने से होगी। उन्होंने कहा कि गाय की नस्ल सुधार के लिए विशेष तकनीक इजाद की गई है, जिसमें विशेष सीमन से उत्तम नस्ल की केवल बछड़ी ही पैदा होंगी। हरियाणा सभा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-उमेद शर्मा, मन्त्री

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

17 मार्च, 2025
से
23 मार्च, 2025

दिल्ली में 150वां आर्य समाज स्थापना दिवस : 6 अप्रैल 2025 ताल कटोरा स्टेडियम

ऐतिहासिक आयोजन की तैयारी हेतु विभिन्न मंडलों के साथ क्षेत्रीय बैठकें सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के अधिकारियों ने मुम्बई पधारने और सहयोग करने का किया आह्वान

मुंबई में जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी, वहीं पर 29, 30 मार्च 2025 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में मुंबई सभा द्वारा एक भव्य और ऐतिहासिक आयोजन किया जा रहा है, वहां के प्रधान श्री हरीश आर्य जी और मंत्री श्री विजय गौतम जी ने दिल्ली आकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा और सभी वेद प्रचार मंडलों के अधिकारियों को कार्यक्रम में भाग लेने हेतु सादर आमंत्रित किया, इसके लिए उत्तर पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल , पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल तथा पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल और सभा कार्यालय में पधार कर आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों को मुम्बई पधारने का आमंत्रण दिया।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने 1875 में जब आर्य समाज की स्थापना मुंबई में की थी, तब से लेकर अब तक आर्य समाज लगातार राष्ट्र और मानव सेवा के कीर्तिमान स्थापित करता आ रहा है, आज आर्य समाज केवल भारत ही नहीं अपितु विश्व पटल पर वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को आगे बढ़ते हुए नित् निरंतर यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग और समर्पण के भाव को आगे बढ़ता जा रहा है। विश्व में 10000 आर्य समाज मंदिर, अनेक गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, डीएवी शिक्षण संस्थान, आर्य विद्यालय, वानप्रस्थ आश्रम, अनाथालय, चिकित्सालय, आर्य प्रतिष्ठान, आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल और अनेक सेवा

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन

आइए, सहभागी और सहयोगी बनें

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौराक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उददेश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
email : aryasabha@yahoo.com

200वीं जयन्ती की डाक टिकट

अधिकाधिक खरीदकर प्रयोग करें

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि यह डाक टिकट स्मृति रूप में अपने पास रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे। आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम जमा करें अथवा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha A/c No. : 2009257009039

IFSC :CNRB0002009 Canara bank New Delhi Branch

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

17 मार्च, 2025
से
23 मार्च, 2025

साप्ताहिक स्वाध्याय

राजपूताना में कार्य

गतांक से आगे–

राजपूताना से महर्षि जी को बराबर निमन्त्रण आ रहे थे। चिरकाल से उनका विचार था कि राजपूताना के राजाओं का सुधार किया जाय। कई अवसरों पर महर्षि ने यह विचार प्रकट किया था कि भारत का भला तभी होगा, जब रजवाड़ों का उद्धार होगा; यदि राजा लोग सुधर जायं तो प्रजा के सुधरने में क्या विलम्ब हो सकता है! यह विश्वास महर्षि के हृदय में घर कर गया था। यही कारण था कि थोड़ी देर के लिए अपने विस्तृत कार्यक्षेत्र संयुक्तप्रान्त और पंजाब की ओर पीठ करके महर्षि राजपूताना की ओर रवाना हुए।

5 मई 1881 के दिन महर्षि दयानन्द राजपूताना के हृदय स्थानीय अजमेर शहर में पहुंचे, और धर्म का प्रचार आरम्भ किया। लगभग डेढ़ मास तक महर्षि का सिंहनाद अजमेर निवासियों के हृदयों को धर्म के मन्दिर में निमन्त्रण देता रहा। जून के अन्त में महर्षि ने अजमेर से मसूदा रियासत की ओर प्रस्थान किया। मसूदा नरेश ने महर्षि जी का बड़ी भक्ति से स्वागत किया। धर्म–प्रचार का अटूट क्रम जारी रहा। इस रियासत में बहुत से हिन्दू ऐसे थे, जो मुसलमानों के राज्यकाल में मुसलमान हुए राजपूतों को लड़कियां देने में कुछ भी संकोच नहीं करते थे। महर्षि जी ने उन लोगों को समझाया कि जिनका धर्म भिन्न है, उन्हें कन्या देकर अपनी कन्याओं को धर्मच्युत करना कभी न्याय नहीं है। मसूदा से महर्षि दयानन्द रायपुर रियासत में पहुंचे।

रायपुर के ठाकुर ने बड़ा सत्कार किया और धर्म प्रचार का प्रबन्ध कर दिया। यहां के मन्त्री शेख इलाहीबख्श नाम के एक मुसलमान थे। इस कारण रियासत में मुसलमानों का काफी जोर था। यहां पर काजी जी से खूब बहस रही, जिसका परिणाम अच्छा हुआ। रायपुर से आसन उठाकर महर्षि जी ब्यावर और बड़ौदा होते हुए 26 अक्टूबर 1881 को आर्यजाति के केन्द्र, राजपूताना के शिरोमणि चित्तौड़गढ़ में विराजमान हुए।

चित्तौड़गढ़ में उस समय बड़ी धूम – धाम थी। लॉर्ड रिपन ने चित्तौड़ में एक बड़ा दरबार बुलाया था। राजा–महाराजा इकट्ठे हुए और सत्संग का बड़ा सुन्दर अवसर था। महर्षि जी का आतिथ्य उदयपुर रियासत की ओर से था। वहां के राजकवि श्यामलदास जी महर्षि जी के भक्त थे। उन्होंने महर्षि जी के विश्राम का पूरा प्रबन्ध कर रखा था। राजपूतों के इस संघ में महर्षि जी को प्रताप और दुर्गादास की सन्तान की दशा देखने का अवसर मिला। कहां वे स्वाधीन शेर, कहां ये राज्य और इन्द्रियों के बंधुए! महर्षि ने राजपूताने की दशा को रोते हुए हृदय से देखा। जो लोग वीरता के आदर्श, मान के पुजारी और स्वाधीनता के पुतले थे, वे महर्षि दयानन्द को विलासिता के दास, अफीम के पुजारी और अंग्रेजी सरकार के बंधुए दिखाई दिये। महर्षि के शिष्य स्वामी आत्मानन्द जी ने एक घटना बताई है। अपने शिष्यों के साथ महर्षि एक दिन चित्तौड़गढ़ का किला देखने गए। जिस महर्षि दयानन्द की आंखों में पिता और बहनों का वियोग तरी न ला सका, चित्तौड़गढ़ की दशा देखकर उनकी आंखों से झर–झर आंसू बहने लगे। महर्षि ने एक ठण्डी सांस लेकर निम्नलिखित आशय के वाक्य कहे 'ब्रह्मचर्य का नाश होने से भारतवर्ष का नाश हुआ है, और ब्रह्मचर्य का उद्धार करने से ही फिर देश का उद्धार हो सकेगा आत्मानन्द। हम चित्तौड़गढ़ में गुरुकुल बनाना चाहते हैं।'

महर्षि जी के व्याख्यानों में कई राजा नियमपूर्वक आया करते थे। शाहपुरा रियासत के नाहरसिंह जी महर्षि जी के भक्तों में से थे। वह सत्संग में प्रायः रोज आते थे। महाराणा सज्जनसिंह अब तक महर्षि जी के दर्शनों को नहीं आए थे। एक दिन उपदेश में एक भक्त मूर्ति राजपूत पध ारे। राजपूतों ने उन्हें बड़ा आदर दिया। व्याख्यान के अन्त में महर्षि ने शाहपुराधीश से कहा कि आपका (अभ्यागत महोदय का) पहले तो कभी साक्षात्कार नहीं हुआ दिखता। आपकी शोभा वर्णन कीजिए।

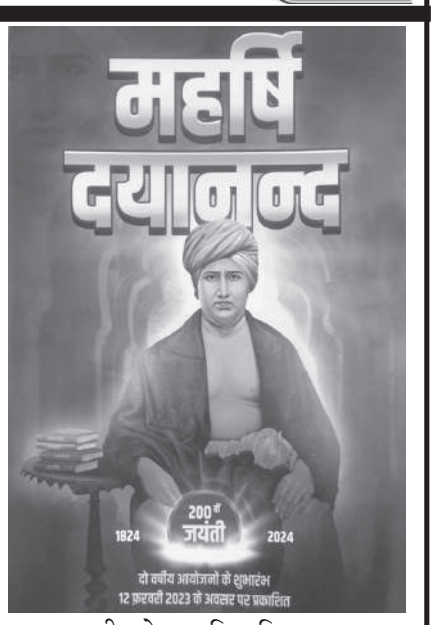

शाहपुराधीश ने उत्तर दिया कि आप महाराणा श्री सज्जनसिंह जी हैं। इस प्रकार इन दो महान् व्यक्तियों का परिचय हुआ। महाराणा सज्जनसिंह यों तो अन्य राजपूत राजाओं की भांति ही पराधीन थे, परन्तु पराधनता में भी उनके अन्दर एक विशेष महानुभावता पाई जाती थी। उनका हृदय विशाल था, विचार उदार थे,

–**क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Works in Rajputana

Swamiji was receiving invitations from Rajputana regularly. Since time immemorial, he had thought that the kings of Rajputana should be reformed. On many occasions, the sage had expressed the idea that India would be benefited only when the princely states would be uplifted. This belief had taken root in the heart of the sage. This was the reason that for a while, Rishiraj turned his back towards the United States and Punjab and proceeded towards Rajputana. On May 5, 1881, Rishi Dayanand reached Ajmer city, the heartland of Rajputana, and started preaching religion. For almost a month and a half, the singing of the sage kept inviting the hearts of the residents of Ajmer to the temple of religion. At the end of June, the sage lef Ajmer towards Masuda Riyasat. Masuda Naresh welcomed Swamiji with great enthusiasm. The unbroken sequence of religious propaganda conti- nued. There were many Hindus in this princely state, who did not hesitate to give girls to Rajputs who became Muslims during the reign of Muslims. Swamiji explained to those people that giving daughters to those whose religion is different, it is never justice to convert one's own daughters.

Rishi Dayanand reached the princely state of Raipur from Masuda. The Thakur of Raipur gave a great hospitality and arranged for the propagation of religion. The minister here was a Muslim named Sheikh Ilahiba-khsh. For this reason, there was a lot of emphasis on Muslims in the princely state. Here there was a heated argument with Kazi ji, the result of which was good. Taking the seat from Raipur, Swami ji seated in Chittorgarh, the center of Arya race, Rajputana's Shiromani on 26 October 1881, passing through Beawar and Baroda.

There was great fanfare in Chittorgarh at that time. Lord Ripon called a big court in Chittor. The kings and emperors gathered and it was a beautiful occasion for satsang. Swami ji's hospitality was from Udaipur state. The Rajkavi Shyamaldas ji there was in awe of Swamiji. He had made complete arrangements for Swamiji's rest. In this union of Rajputs, Swamiji got the opportunity to give the condition of the children of Pratap and Durgadas. Where are those independent lions, where are these captives of the kingdom and the senses! The sage saw the condition of Rajputana with a weeping heart. Those who were ideals of bravery, worshipers of honor and statues of freedom, they appeared to Rishi Dayanand as slaves of luxury, priests of opium and captives of the British government. Sage's disciple Swami Atmanand ji has given an incident. One day the sage along with his disciples went to visit the fort of Chittorgarh. Rishi Dayanand whose bowels of father and sisters could not be soothed, tears started flowing from his bowels after seeing the condition of Chittorgarh. Taking a cold breath, the sage uttered the following sentences: "Bharat-varsha has been destroyed due to the destruction of celibacy, and only by saving celibacy, the country can be saved. We want to build a Gurukul in Chittorgarh.

Many kings regularly used to attend Swamiji's lectures. Naharsingh ji of Shahpura princely state was one of the devotees of Swami ji. He used to attend satsang almost daily. Maharana Sajjan Singh had not yet come to visit Swamiji. One day a Bhagat Murti Rajput came to the sermon. Rajputs gave him great respect. At the end of the lecture, the sage said to King of Shahpur that 'you (the visitor sir) have never been interviewed before. Please give your introduction .

Shahpuradhish replied that 'you are Maharana Shri Sajjan Singh ji.' Thus the introduction of these two great personalities took place. Although Maharana Sajjan Singh was subordinate like other Rajput kings, but even in subordination, a special greatness was found in him. His heart was large, his thoughts were liberal, there was a smell of independence in his character.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

कथा वाचकों की जाति पर बहस....

मत सम्प्रदाय के लोग उठाने लगे। एक सनातन धर्म के लोग मत सम्प्रदाय में ना केवल विभाजित हुए, बल्कि एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हो गए। पर सोचिए, हानि किसकी हुई? लोगों की या सनातन धर्म की? जातीय विद्वेष धर्म ने दिया या संचालित लोगों ने? शोषण धर्म की देन था या लोगों की सोच का? कुछ भी हुआ, हानि तो सनातन धर्म की हुई ना? अगर जातिगत आधार पर किसी को कथा करने से रोकने जैसे कार्य होंगे, तो निश्चित ही इससे धर्म की हानि होगी। अगर ऐसी कमजोरियां आप खोजेंगे या अन्य भी बहुत सारी कमजोरियां आपको मिल जाएंगी। धर्म और ईश्वर पर सबका बराबर अधिकार है।

हमें नहीं पता इन लोगों के धार्मिक ज्ञान की सीमा कितनी है, इनकी सोच का दायरा कितना बड़ा है, ये लोग धर्म को कितनी गति देने की इच्छा रखते हैं, किन्तु इतना जरूर पता है कि ऐसे कथित धर्माचार्यों को अपने इतिहास का ज्ञान जरूर न्यून है। यदि एक भी दिन ये लोग अपना इतिहास उठाकर पढ़ लें, तो शायद जान पाएंगे कि इस जातिवाद और छुआछूत के कारण ही हम अफगानिस्तान से सिमटते-सिमटते दिल्ली तक रह गए। इस सब के बाद भी हम नहीं समझ रहे हैं। आज भी देश के कोने-कोने से आ रही धर्मांतरण की खबरों के बीच, जहाँ धर्माचार्यों, शंकराचार्यों, पुजारियों, महंतों को हिंदू समाज को दिशा दिखानी चाहिए, लेकिन लगता है कि खुद उन्हें दिशा दिखाने की जरूरत है। क्योंकि घटनाओं या खबरों पर ये लोग मौन रहकर अपनी मूक स्वीकृति सी प्रदान कर रहे हैं।

2016 की वो खबर सबको याद होगी जब उत्तराखंड के चकराता के पोखरी गांव के पौराणिक शिल्गुर देवता मंदिर में दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाने गए सांसद को ही लोगों ने पीट दिया था, तो सोचिए, साधारण आदमियों की क्या दशा होगी। बात सिर्फ दलित मंदिर प्रवेश के अधिकार की नहीं थी। ये अधिकार तो हमारा कानून भी देता है। बात सामाजिक चेतना की है। अपने इतिहास से सीखने की है।

स्वामी श्रद्धानंद के विचारों को उनके द्वारा लिखित पुस्तकों को पढ़ने से ही ज्ञात हो जाएगा कि अतीत के कालखंड में हमने जातिवाद के कारण धार्मिक रूप से कितना नुकसान उठाया है। किस तरह स्वामी श्रद्धानंद ने मन के कपाट खोलकर समरसता का दीप जलाया था।

आज एक ओर तो हिंदू समाज के धर्माचार्य दलितों के धर्मांतरण पर चिंता जताते दिखते हैं। दूसरी ओर वे ऐसी जातिवादी घटनाओं की अनदेखी करते हैं। जबकि हिंदुओं के बड़े धर्माचार्यों को स्वयं सामने आकर यह दीवार गिरानी होगी, एक वैचारिक आधुनिकता लानी होगी, इसके आए बिना तो इस समस्या का निर्णायक हल होने से रहा। जब वो स्वयं सामने आएंगे, वो कहेंगे कि कथा करने के अधिकार पर किसी का लाइसेंस नहीं है, तो हजारों देविका खड़ी होंगी जो अपने-अपने समाज को जागरूक करेंगी। वरना यह जातिवाद बढ़ता ही चला जाएगा।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

नर्वस सिस्टम सम्बन्धी रोग .....

अंगुलियों का लकवा (writer's paralysis): इसमें हाथ की अंगुलियों पर प्रभाव पड़ता है। कई लोगों का अंगूठा पूरी तरह हिल नहीं पाता और वे ठीक प्रकार लिख नहीं पाते।

पोलियो (polio-poliomyelitis)

यह रोग किसी भी आयु के व्यक्ति विशेषकर पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों और उनमें भी अधिकतर छः मास से एक साल की आयु के बच्चों को एकाएक वायरस के आक्रमण (Polio-Poliomyelitis is caused by a virus infection which specially attcks the anterior, motorhorn cells in the spinal cord. It may also, however. affect the brain, especially the midbrain, producing what is called encephalitils) के कारण होता है। इस रोग में पहले सिरदर्द, गले का दर्द और बुखार होता है। गर्दन और पीठ की मांसपेशियां दर्द करती हैं, उसके बाद मांसपेशियां सूखने लगती हैं जिस कारण चलना फिरना कठिन हो जाता है। विशेषकर एक टांग बहुत दुर्बल व पतली हो जाती है और लम्बाई में दूसरी टांग से थोड़ी छोटी भी हो जाती है। कई रोगियों के पैर में पूरी शक्ति नहीं रहती जिस कारण कई बार पैर से चप्पल अपने आप बाहर निकल जाती है। कई रोगियों का एक बाजू भी दुर्बल हो जाता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, हड्डियों और जोड़ो में भी विकृति आने लगती है। हमारे देश में जितने अपंग बालक हैं उनमें से दो तिहाई पोलियो के कारण अपंग हैं। यद्यपि विकसित देशों में पोलियो की बीमारी का पूरी तरह उन्मूलन कर दिया गया है, विकासशील देशों में अब भी यह बीमारी है।

लकवा होने पर डॉक्टरी सहायता ली जाए। समय पर उचित डॉक्टरी सहायता मिल जाने से यह रोग प्रारम्भिक अवस्था में ही ठीक हो जाता है। अगर तुरंत डॉक्टरी सहायता न मिल सके तो ऐसी स्थिति में इन रोगों के लिए एक्युप्रेशर का इलाज काफी कारगर सिद्ध होता है।

-सहज उपचार, पुस्तक से साभार

खेद व्यक्त

खेद है कि सभा द्वारा आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह की तैयारियों के चलते आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 20 वर्ष 48 दिनांक 10 मार्च से 16 मार्च, 2025 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है।

- सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

दिल्ली में 150वां आर्य समाज स्थापना दिवस ....

संस्थान इस ऐतिहासिक तथ्य का प्रमाण है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की अमर वाटिका आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण करके संपूर्ण मानवजाति को सुमार्ग दिखाने के लिए प्रयासरत है। यूं तो आर्य समाज पिछले दो वर्षों से निरन्तर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में एक से बढ़कर एक ऐतिहासिक आयोजन समारोह पूर्वक आयोजित करता आ रहा है, किंतु आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस संपूर्ण आर्य जगत के लिए अत्यंत गौरव का अवसर है। आर्यसमाज के 150वें स्थापना दिवस का भव्य आयोजन 29-30 मार्च को मुम्बई में तथा 6 अप्रैल को दिल्ली में होना सुनिश्चित है, इसके लिए 8 मार्च को सेक्टर 7 रोहिणी में उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल की विशेष बैठक की गई, जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चडडा जी, उत्तर पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेंद्र आर्य जी, महामंत्री श्री जोगेंद्र खटटर जी एवं समस्त क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। मुंबई सभा की ओर से सभी को आमंत्रित किया गया और सभी ने पहुंचने के लिए अपनी सहमति प्रदान की। कार्यक्रम की तैयारियों और निमंत्रण के इस क्रम में आर्य समाज डी ब्लॉक विकासपुरी के प्रांगण में 9 मार्च को पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल की बैठक आयोजित हुई, जिसमें मुंबई सभा के प्रधान और मंत्री, दिल्ली सभा के प्रधान और मंत्री, आर्य केंद्रीय सभा के मंत्री, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान श्री कर्नल रमेश मदान जी एवं क्षेत्रीय समाजों के अधिकारी उपस्थित रहे, वहां पर भी सभी को सादर आमंत्रित किया गया। इसके साथ ही पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल की बैठक आर्य समाज सूरजमल विहार में आयोजित की गई, जिसमें वेद प्रचार मंडल के अधिकारियों के साथ ही दिल्ली सभा के अधिकारी, आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारी और क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मुंबई सभा द्वारा आयोजित ऐतिहासिक कार्यक्रम अपने आप में ऐतिहासिक है, वहां सभी ने वहां पहुंचने के लिए अपने सहमति जताई।

इसके साथ ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आगामी 6 अप्रैल को 150वां आर्य समाज स्थापना दिवस दिल्ली के सुप्रसिद्ध तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में भव्य और ऐतिहासिक रूप से समारोह पूर्वक आयोजित करने की तैयारी जोरों पर चल रही है। उपरोक्त बैठकों में दिल्ली आयोजित होने वाले आर्य समाज स्थापना दिवस, 6 अप्रैल 2025 को लेकर विशेष उत्साह का वातावरण दिखाई दिया। इस क्रम 15 मार्च को दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की बैठक आर्य समाज किदवई नगर में मण्डल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता जी के अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें क्षेत्रीय आर्य समाजों के उपस्थित रहे और श्री विनय आर्य जी ने कार्यक्रम की भव्यता और सफलता के लिए विशेष विचार प्रस्तुत किये। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य समाज अशोक विहार-1 सायं काल मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र पाल सिंह जी की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई, जिसमें क्षेत्रीय समाजों के अधिकारियों के साथ सभा महामंत्री ने विचार मंथन किया। इन ऐतिहासिक अवसरों पर समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थानों, आर्य प्रतिष्ठानों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और आर्य परिवार दलबल सहित पधारकर अपने श्रेष्ठ संगठन आर्य समाज की शक्ति का परिचय अवश्य दें।

- सतीश चड्ढ़ा, महामन्त्री

शोक समाचार

प्रो. महावीर अग्रवाल जी का निधन

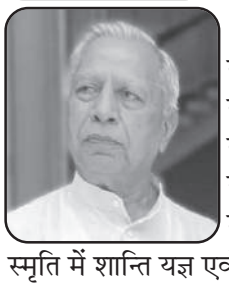

आर्यसमाज के विद्वान एवं पातंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल जी का 17 मार्च, 2025 को 74 वर्ष की आयु में बैंगलुरु के अस्पताल में उपचार के दौरान निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार 18 मार्च को कनखल शमशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 मार्च, 2025 को सम्पन्न हुई।

श्री अशोक आर्य जी को मातृशोक

आर्यसमाज टैगोर गार्डन ए.सी. ब्लाक, नई दिल्ली के प्रधान श्री अशोक आर्य जी की पूज्या माता श्रीमती विनोद आर्या जी का 15 मार्च, 2025 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 18 मार्च, 2025 को आर्यसमाज टैगार गार्डन में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 17 मार्च, 2025 से रविवार 23 मार्च, 2025

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/03/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 मार्च, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	3000/- रुपये	2000/- रुपये

इसके साथ ही कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/- रुपये एवं कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवेदन आरंभ की तिथि : 01-04-2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह